**हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 10 के अन्तर्गत न्याययिक वियोजन हेतु याचिका**

**(Petition u/sec. 10 of Hindu Marriage Act, 1955 for Judicial Separation)**

न्यायालय………..

वाद नंबर............ सन् ..

अ० ब० स० ............ याची/पेटिशनर

**बनाम**

स० द० फ० ............ उत्तरदाता

श्रीमान जी,

याची निम्न प्रकार सविनय निवेदन करता है :

1. यह कि याची का विवाह उत्तरदाता के साथ दिनांक ............ को ............ में इस मान्य न्यायालय के कार्यक्षेत्र में हुआ था। विवाह हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार सम्पन्न हुआ था।
2. यह कि विगत में याची और उत्तरदाता ............. में साथ-साथ रहते थे।
3. यह कि विवाह के समय से ही उत्तरदाता का याची के साथ कृरता का व्यवहार रहा है । (कृरता के तथ्यों का वर्णन करें)

**अथवा**

उत्तरदाता जार कर्म में लिप्त है | (जार कर्म के तथ्यों का वर्णन करें)

**अथवा**

अन्य कोई आधार (उसका वर्णन करें)

उपरोक्त कारणों से याची का जीवन नर्क बन गया है । याची व उत्तरदाता का एक साथ रहना असम्भव हो गया है।

1. यह कि उत्तरदाता की क्रूरता/जारकर्म में याची न तो सहायक है, न ही उसकी कोई मौनानुमति है और न ही उत्तरदाता के कृत्यों को क्षमा किया गया है—याची एवं उत्तरदाता के मध्य न तो दुरभि संधि है और न ही कोई मौनानुमति है ।
2. यह कि मान्य न्यायालय के लिए कोई कानूनी आधार न्यायिक वियोजन को अस्वीकार करने

का नहीं है।

1. यह कि याची को उत्तरदाता के विरुद्ध वाद का हेतुक इस मान्य न्यायालय के कार्य क्षेत्र में नाक ............ को तब उत्पन्न हआ जब......... ।
2. यह कि कार्य क्षेत्र के उद्देश्य से याचिका का मूल्यांकन रु० ........ न्याय शुल्क भुगतान की गई है।

**प्रार्थना**

इसलिए यह सविनय प्रार्थना की जाती है कि याची के हित में और उत्तरदाता के विरुद्ध न्यायिक वियोजन की डिक्री पारित की जाये । और वाद व्यय दिलाया जाये।

**............. (याची)**

**........शनाख्त अधिवक्ता**

**सत्यापन**

मैं कि उपरोक्त नामित याची यह सत्यापित करता हूँ कि पैरा ............ से ............ तक के तथ्य मेरे निजी ज्ञान में सत्य हैं और पैरा ............ से ............ तक विधिक परामर्श व मेरे विश्वास में सत्य हैं।

**दिनांक ............ दिन ............ स्थान .......**

 **.........(याची)**

 **............शनाख्त अधिवक्ता**